इकाई 9 पुनःरचना

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 नोट्स लेखन
9.3 सार लेखन
9.4 रिपोर्ट लेखन
9.5 भाव पल्लवन
9.6 सारांश
9.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

पुनःरचना या पुनर्लेखन लेखन का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। कई बार हमें किसी लेख को पढ़कर या भाषण को सुनकर उसका विवरण प्रस्तुत करना होता है। कई बार किसी घटना या किन्हीं तथ्यों के संबंध में रिपोर्ट या प्रतिवेदन तैयार करना होता है या परीक्षा की तैयारी के लिए पाठ्यसामग्री का अध्ययन करके उसमें से महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिखना होता है ताकि उनके आधार पर परीक्षा में आए प्रश्नों के उत्तर के लिए सामग्री का संकलन कार्य कर सकें। उक्त सभी प्रकार के लेखन के लिए आधार रूप में हमें नोट्स लेने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इसे हम महत्वपूर्ण बिंदुओं/तथ्यों को निकालना भी कह सकते हैं। यही 'नोट्स' कई प्रकार के पुनर्लेखन का आधार बनते हैं। लिखित या मौखिक सामग्री के 'नोट्स' के आधार पर हम पुनःरचना के विभिन्न प्रकारों का लेखन कर सकते हैं। इन्हीं 'नोट्स' के आधार पर मूल पाठ का सार प्रस्तुत किया जा सकता है या किसी घटना या तथ्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की जा सकती है या कोई शोधलेख लिखा जा सकता है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि -

- लिखित या मौखिक सामग्री के नोट्स कैसे लिए जा सकते हैं।
- लिए गए 'नोट्स' को सारलेखन या संक्षेपण में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है।
- नोट्स के आधार पर रिपोर्ट या प्रतिवेदन लेखन कैसे किया जा सकता है एवं इस प्रकार के पुनर्लेखन के क्या नियम हैं।
- भाव पल्लवन के द्वारा किसी सूक्ति के भाव का विस्तार कैसे किया जा सकता है।

कुछ गद्यांशों के उदाहरण देते हुए आपके समक्ष पुनर्लेखन के विभिन्न रूपों को स्पष्ट किया जाएगा तथा विभिन्न स्वमूल्यांकन अध्ययनों के माध्यम से इस प्रकार के लेखन का अभ्यास कराया जाएगा।

9.1 प्रस्तावना

प्रत्येक प्रकार के संप्रेषण में - चाहे लिखित हो या मौखिक - लेखक या वक्ता विशिष्ट सूचनाओं को संप्रेषित करता है। दूसरे शब्दों में, यह सूचना-संप्रेषण भाषाई आवरण में लिपटा होता है। अपने संप्रेष्य भाव को सीधे-सपाट शब्दो में न प्रकट कर, उसको संप्रेष्य बनाने के लिए, श्रोता या पाठक तक पहुँचाने के लिए कुछ ऐसी रीतियाँ अपनाता है जिससे उसका संप्रेषण सहज, बोधगम्य एव रोचक बन सके। इसके लिए उसे अपनी बात की कई प्रकार से पुनरावृत्ति करनी पड़ सकती है या अधिक स्पष्ट करने के लिए उदाहरण या रोचक घटनाएँ प्रस्तुत करनी पड़ सकती हैं।

पाठक या श्रोता के रूप में हमें मूल कथ्य तक पहुँचना होता है। उसे समझकर अपने शब्दो मे, विभिन्न रूपों में लिखना होता है। हम किसी परीक्षोपयोगी सामग्री का अध्ययन कर उसके महत्वपूर्ण बिंदुओं के नोट्स ले सकते हैं और फिर परीक्षा के दौरान प्रश्नों का उत्तर लिख सकते हैं या मौखिक परीक्षा या साक्षात्कार के दौरान प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। किसी पाठ्य या श्रुत सामग्री के आधार पर सारलेखन कर सकते हैं अथवा संकलित महत्वपूर्ण बिंदुओं के आधार पर प्रतिवेदन लिख सकते हैं।

अब हम इस इकाई के विभिन्न भागों में नोट्स लेखन, सारलेखन, रिपोर्ट लेखन तथा भाव पल्लवन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे तथा उनके लेखन का अभ्यास करेंगे।

9.2 नोट्स लेखन

पुनःरचना या पुनर्लेखन के विभिन्न प्रकारों - सार लेखन, रिपोर्ट लेखन आदि में लिखित या मौखिक सामग्री के आधार पर लिए गए नोट्स का महत्व सर्वविदित है। वास्तव में, यह सशक्त पुनर्लेखन का आधार है। 'नोट्स' के आधार पर हम किसी लेख या भाषण या पत्राचार आदि के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को निकाल सकते हैं और फिर उन्हें पुनर्लेखन के भिन्न-भिन्न प्रकारों में परिवर्तित कर सकते हैं।

जैसा कि ऊपर कहा जा सकता है कि नोट्स लिखित या मौखिक सामग्री दोनों के आधार पर लिए जा सकते हैं, किंतु इन दोनों विधाओं के नोट्स लेने में पर्याप्त अंतर होता है। लिखित सामग्री के 'नोट्स' लेते समय नोट्स लेखक अपनी गति से कार्य करता है, आवश्यकता पड़ने पर सहायक या संदर्भ सामग्री से सहायता भी ले सकता है। इस प्रकार के नोट्स परीक्षा की तैयारी या शोध लेख लिखने में सहायक होते हैं। मौखिक भाषा के आधार पर नोट्स लेने के लिए एक विशेष प्रकार की तैयारी की आवश्यकता होती है। किसी भाषण या व्याख्यान के नोट्स लेते समय 'नोट्स लेखक' को वक्ता की गति के अनुसार चलना पड़ता है। श्रव्य सामग्री के नोट्स लेने के पहले, व्याख्यान के शीर्षक तथा संबद्ध विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करनी होती है तथा व्याख्यान के दौरान मानसिक रूप से जाग्रत रहने की आवश्यकता होती है।

लिखित या मौखिक माध्यम के नोट्स लेते समय प्रत्येक वाक्य या शब्द को लिखने की आवश्यकता नहीं होती। यह जानने और पहचानने की आवश्यकता है कि लेखक या वक्ता अपनी बात को कैसे व्यक्त करता है, कितनी पुनरावृत्ति के स्थलों को छोड़ा जा सकता है। वह अपने संप्रेषण में कुछ ऐसी भाषिक उक्तियों का प्रयोग करता है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए पुनरावृत्ति या दोहराव का सहारा ले रहा है। इन उक्तियों पर ध्यान दीजिए -

- **आपको ध्यान होगा कि -**
- **पहले हम इस संबंध में बता चुके हैं कि -**
- **हमने पहले यह कहा था कि -**

ऐसी उक्तियों के साथ दी गई सूचना के नोट्स लेने की आवश्यकता नहीं होती।

प्रत्येक लेख या भाषण के तीन भाग होते हैं - प्रस्तावना, मुख्य भाव तथा निष्कर्ष। लेखक या वक्ता अपने संप्रेषण में मुख्य बिंदुओं के साथ कुछ गौण बिंदुओं की भी प्रस्तुति करता है। ऐसे कई भाषिक प्रयोग हमें लेखक या वक्ता के मुख्य बिंदु की ओर संकेत करते हैं। जैसे -

- **यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि**
- **यह ध्यान रखने की जरूरत है कि**
- **इस बात पर विशेष बल देने की आवश्यकता है कि**

कई बार वक्ता अपने भाषण के मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखता चलता है। ऐसे बिंदुओं को 'नोट्स लेखन' में सम्मिलित किया जा सकता है। इसी प्रकार गौण बिंदुओं के संकेत भी कुछ उक्ति प्रकारों से मिल जाते हैं। जैसे -

- **मैं कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूँगा -**
- **मैं यह भी जोड़ना/कहना चाहूँगा -**
- **मैंने यह बताने/स्पष्ट करने की चेष्टा की है -**

कुछ वक्ता अपने लेख या भाषण को रोचक बनाने के लिए इधर-उधर की बातें करते हैं। कई बार ऐसी बातों का लेख या भाषण के मुख्य विषय से सीधा संबंध नहीं होता। ऐसे स्थलों के नोट्स लेने की भी आवश्यकता नहीं होती।

इस गद्यांश को पढिए -

आधुनिक जीवन शैली और गलत खान-पान के तौर-तरीकों के कारण आज हृदयरोग केवल प्रौढ़ों तथा अधेड़ों का रोग नहीं रह गया है, बल्कि नौजवान भी बड़ी संख्या में इस रोग का शिकार हो रहे हैं। हृदयरोग या दिल के दौरे के कारण लाखों लोग प्रति वर्ष मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। इसका मुख्य कारण रक्त धमनियों में रक्त की रुकावट होता है और समय रहते इसका पता नहीं चल पाता। रक्त धमनियों में रुकावट का समय रहते पता लगाने की तकनीक के विकास से इस रोग पर अंकुश लगाने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि अब नौजवान भी इस रोग का शिकार हो रहे हैं, अब 35-44 वर्ष के आयु वर्ग के लोग इसके चंगुल में आने लगे हैं। 55 वर्ष से अधिक के लोगों के लिए तो यह रोग मृत्यु का पर्याय बन जाता है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में हृदयरोग कम होते हैं लेकिन रजोनिवृत्ति के बाद शरीर में हारमोन परिवर्तन के कारण महिलाएँ भी पुरुषों के समान इस रोग का शिकार होने लगी हैं।

अब निम्नलिखित बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए तथा अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

बोध प्रश्न-1

1. हृदय रोग का मुख्य कारण क्या है?

.....

.....

.....

2. हृदय रोग को कैसे रोका जा सकता है?

.....

.....

.....

3. क्या पुरुषों की तुलना में महिलाओं में हृदय रोग कम होता है?

.....

.....

.....

4. उपर्युक्त गद्यांश में 'पुनरावृत्ति' को निकालकर लिखिए।

.....

.....

.....

अब इस गद्यांश को पढिए -

हृदय रोग के प्रमुख कारणों में धूम्रपान, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, तनावपूर्ण जीवन तथा आनुवांशिक कारणों को लिया जा सकता है। आमतौर पर दिल के दौरे अचानक पड़ते हैं। रोगी की रक्त धमनियों में रुकावट आने या रक्त के थक्के बन जाने के कारण धमनी में अवरोध पैदा हो जाता है जो दिल के दौरे का कारण बनता है। अभी तक धमनी में रुकावट का पता लगाने के लिए 'ई.सी.जी.', 'इलैक्ट्रोग्राफी थैलियम जाँच' और 'कोरोनरी एंजियोग्राफी' का प्रयोग किया जाता है। इनमें से केवल 'कोरोनरी ऐंजियोग्राफी' से ही धमनी की रुकावट का पता चल सकता है। इस तकनीक के लिए रोगी को अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है और इस पर खर्च भी ज्यादा आता है।

एंजियोग्राफी की इन कमियों को ध्यान में रखकर अब एक नई तकनीक का विकास किया गया है जिससे केवल दस मिनट में ही धमनियों में रुकावट का पता लगाया जा सकता है।

इसमें रोगी को केवल सुई लगाने जितना दर्द होता है और इस पर खर्च भी बहुत अधिक नहीं होता। इस तकनीक का नाम है - मैट्रो कोरोनरी स्क्रीनिंग। इसके अंतर्गत रोगी के हाथ में उस जगह से रक्त धमनियों में अत्यंत पतला कैथेटर प्रवेश कराया जाता है जहाँ से सामान्यतया रक्त लेते हैं और कालेस्ट्राल का पता चलाते हैं।"

बोध प्रश्न-2

मौखिक सामग्री के नोट्स लेने के अध्ययन के रूप में उपर्युक्त गद्यांश को किसी की आवाज़ में सुनिए। सुनने से पहले निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ लीजिए। उपर्युक्त सामग्री को सुनने के दौरान प्रश्नों का उत्तर नोट करते चलिए।

1. निम्नलिखित कथनों पर सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाइए।
   1. केवल आनुवंशिक कारणों से ही हृदयरोग होता है। ( )
   2. रक्त के थक्के बन जाने के कारण रक्त-धमनियों में अवरोध पैदा होता है। ( )
   3. 'कोरोनरी एंजियोग्राफी' से ही केवल रक्त-धमनियों की रुकावट का पता चलता है। ( )
   4. 'कोरोनरी एंजियोग्राफी' में बहुत कम खर्च आता है। ( )
   5. 'मैट्रो कोरोनरी स्क्रीनिंग' एक अपेक्षाकृत सस्ती तकनीक है जिससे धमनियों में रुकावट का पता लगाया जा सकता है। ( )
   6. ई.सी.जी. से दिल के दौरे का कारण का पता चलता है। ( )

2. उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर कॉलम 'क' तथा कॉलम 'ख' की सूचना का सही मिलान कीजिए।

कॉलम 'क'	**कॉलम 'ख'**
1. उच्च रक्तचाप व तनावपूर्ण जीवन से	(i) अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है।
2. कोरोनरी एंजियोग्राफी के लिए	(ii) धमनी में अवरोध पैदा होता है।
3. रक्त में थक्के बनने के कारण	(iii) हृदय रोग की संभावना बढ़ जाती है।
4. मैट्रो कोरोनरी स्क्रीनिंग में	(iv) नई तकनीक का विकास हुआ है।
5. हृदय रोग का पता लगाने के लिए अब	(v) रक्त धमनियों में पतला कैथेटर डाला जाता है।

बोध प्रश्न-3

उपर्युक्त दोनों गद्यांशों के आधार पर 'नोट्स' लीजिए जिनमें हृदय रोग के प्रमुख कारणों तथा उसका पता लगाने संबंधी विभिन्न तकनीकों का पता चल सके। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभी तक हमने 'नोट्स लेखन' का अभ्यास किया। अब नाट्स लेखन से पुनर्लेखन में कैसे सहायता प्राप्त हो सकती है, इसके बारे में हम इसी इकाई के अगले भागों में पढ़ेंगे और सारलेखन तथा रिपोर्ट लेखन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। इकाई के अंत में किसी सूक्ति या उक्ति के भाव का विस्तार कैसे किया जा सकता है, इसके बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

9.3 सार लेखन

सार लेखन या संक्षेपण का उद्देश्य किसी वस्तु या पाठ के मूल भावों को संक्षिप्त रूप में प्रकट करना होता है। कुछ विद्वान सारलेखन तथा संक्षेपण में अंतर मानते हैं। उनके अनुसार संक्षेपण में किसी पाठ की प्रमुख बातों को संक्षेप में दिया जाता है और सारलेखन में पाठ के केंद्रीय भाव को थोड़े शब्दों में प्रकट किया जाता है। हम यहाँ सारलेखन तथा संक्षेपण में कोई विशिष्ट अंतर न मानते हुए दोनों को एक ही मानकर चल रहे हैं।

सारलेखन का प्रयोग शिक्षा, कार्यालय, वाणिज्य, विधि, पत्रकारिता आदि विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। इसके लिए कुछ नियमों को हृदयंगम करना सहायक होगा।

- किसी पाठ का सारलेखन करने से पूर्व, उसे दो-तीन बार पढ़ना चाहिए और उसमें व्यक्त मूल या केन्द्रीय भाव को समझना चाहिए।
- पाठ के मुख्य भावों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
- रेखांकित मुख्य भावों को अपने शब्दों में लिख लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में पाठ के आधार पर 'नोट्स' ले लेने चाहिए।
- सारलेखन के बाद पाठ का शीर्षक देना चाहिए।
- आकार की दृष्टि से सारलेखन मूल पाठ का एक तिहाई होना चाहिए।
- सारलेखन के बाद उसे दो बार पढ़ लेना चाहिए ताकि उसमें किसी प्रकार का दोष न रह जाए।

सारलेखन के विभिन्न प्रकारों में - प्रवाहपूर्ण सार, तारीखवार सार, क्रमिक सार, तालिकाबद्ध सार आदि की चर्चा की जाती है। लेखों, प्रलेखों, भाषणों, बैठकों, कार्यवृत्त या रिपोर्ट के आधार पर तैयार किए गए सार को 'प्रवाहपूर्ण सार' की संज्ञा दी जाती है।

अब इस गद्यांश को पढ़िए।

हमारे जीवन तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग अब बढ़ता जा रहा है। बीसवीं शताब्दी में विकसित श्रव्य, दृश्य-श्रव्य तथा कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का प्रभाव सर्वाधिक है।

मनुष्य ने जब से गणना करना सीखा, तभी से, उसने अधिक सुगमता से गणना करने वाले यंत्रों के विकास के लिए खोज शुरू कर दी। इसके फलस्वरूप 'अबेकस'(Abacus) तथा कई प्रकार के कैलकुलेटरों का विकास हुआ। अबेकस का विकास आज से कोई पाँच हजार वर्ष पूर्व हुआ था। इस गणना यंत्र को एक प्रकार का कंप्यूटर कहा जा सकता है। बीसवीं शताब्दी में आधुनिक कंप्यूटरों का विकास भी इसी विकास यात्रा की शृंखला की एक कड़ी है।

कंप्यूटर विकास को हम पाँच पीढ़ियों में विभाजित कर सकते हैं। **पहली पीढ़ी** के कंप्यूटरों में यंत्र सामग्री के अंतर्गत वैक्यूम ट्यूब का प्रयोग होता था, जिससे उनका आकार बहुत बड़ा होता था। इन कंप्यूटरों में प्रोग्रामिंग भाषा के तौर पर मशीनी भाषा का प्रयोग किया जाता था और कंप्यूटर प्रोग्राम बाइनरी कोड में बनाए जाते थे। **दूसरी पीढ़ी** के कंप्यूटरों में वैक्यूम ट्यूब के स्थान पर ट्रांसिस्टरों का प्रयोग होने लगा। इससे मशीन के आकार में कमी आई और ऊर्जा की भी बचत होने लगी। इसी दौरान आपरेटिंग सिस्टम और प्रोग्रामिंग भाषाओं का भी विकास हुआ। **तीसरी पीढ़ी** के कंप्यूटरों में ट्रांसिस्टर का स्थान 'इंटेग्रेटिड चिप' ने ले लिया। विभिन्न आपरेटिंग सिस्टमों तथा स्मृति क्षमता का विकास हुआ। **चौथी पीढ़ी** के कंप्यूटरों में माइक्रो प्रोसेसर तथा नेटवर्किंग का विकास हुआ जिसके फलस्वरूप इंटरनेट का विकास संभव हो पाया। इस समय हम चौथी पीढ़ी के कंप्यूटरों का प्रयोग कर रहे हैं। कंप्यूटर की **पाँचवी पीढ़ी** भविष्य की प्रौद्योगिकी के रूप में देखी जा सकती है। कंप्यूटर मानव आवाज

को सुनकर उसे पाठ के रूप में बदल सकेगा। यांत्रिक बुद्धिमत्ता के प्रयोग से सूचना संसाधन की क्षमता बहुत अधिक बढ़ जाएगी।

उपर्युक्त गद्यांश में कंप्यूटर के विकास के संबंध में निम्नलिखित मुख्य बातें कही गई हैं -

1. कंप्यूटर का विकास बीसवीं शताब्दी की मुख्य घटना है।
2. हज़ारों वर्षों पूर्व अबेकस जैसे गणना यंत्र का विकास
3. कंप्यूटर विकास की पाँच पीढ़ियाँ - यंत्र सामग्री एवं प्रोग्रामिंग भाषाओं के विकास से यह सब संभव हुआ है।
4. भावी कंप्यूटर मनुष्य की आवाज़ को समझ सकेंगे और सूचना संसाधन की क्षमता का विकास हो जाएगा।

शीर्षक - कंप्यूटर का विकास

उपर्युक्त मुख्य बिंदुओं के आधार पर सार लेखन इस प्रकार किया जा सकता है -

कंप्यूटर का विकास

कंप्यूटर का विकास आधुनिक शताब्दी की एक प्रमुख घटना है। कंप्यूटर विकास को पाँच पीढ़ियों में बाँटा जा सकता है। यह विकास कंप्यूटर के प्रोसेसर में, वैक्यूम ट्यूब से ट्रांसिस्टर, ट्रांसिस्टर से इंटेग्रेटिड चिप तथा माइक्रो प्रोसेसर के विकास एवं प्रयोग से संभव हुआ है। पाँचवी पीढ़ी के कंप्यूटरों में यांत्रिक बुद्धिमत्ता के प्रयोग से कंप्यूटर मानव की आवाज़ को समझने योग्य हो जाएँगे और उनकी सूचना संसाधन क्षमता बहुत अधिक बढ़ जाएगी।

बोध प्रश्न-4

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर सारलेखन कीजिए तथा अपने उत्तर का मिलान पाठ के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

गांधी जी और अहिंसा एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। विश्व के इतिहास में किसी भी राजनेता ने अहिंसा को इतनी उत्कृष्टता से अपने जीवन का ध्येय नहीं बनाया है। यही कारण है कि सामाजिक और आर्थिक संघर्षों के समाधान के लिए गांधी जी ने अहिंसा का ही रास्ता बताया। समाज को उनका यह अनोखा योगदान माना जाता है।

गांधी जी का संपूर्ण दर्शन अहिंसा पर आधारित है। उन्होंने लिखा है - 'अहिंसा मेरी आस्था का प्रथम अनुच्छेद है, यही मेरी आस्था का अंतिम अनुच्छेद भी है।' गांधी जी अहिंसा को मानव जाति की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे। उनका कहना था कि मनुष्य ने अपने कौशल से संहार के कितने ही अस्त्र बनाए हैं, फिर भी अहिंसा उन सबसे कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। गांधी जी का संपूर्ण जीवन, उनकी तमाम गतिविधियाँ अहिंसा पर केंद्रित रहीं।

गांधी दर्शन में अहिंसा के कई पक्ष मिलते हैं। यह साधन भी है और साध्य भी। साध्य के रूप में वे ऐसे अहिंसक व्यक्तियों की कल्पना करते हैं जो अहिंसक समाज, अहिंसक राष्ट्र और अहिंसक विश्व का निर्माण करेंगे। गांधी जी अहिंसा को सत्य और ईश्वर मानते थे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.4 रिपोर्ट लेखन

रिपोर्ट या प्रतिवेदन लेखन पुनर्लेखन का एक प्रमुख प्रकार है जिसके द्वारा किसी कार्य या घटना का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है। किसी घटना, समारोह, उद्घाटन, सभा, जुलूस या किसी स्थिति के बारे में प्रतिवेदन लिखे जाते हैं।

रिपोर्ट लेखन का प्रयोग सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में किया जाता है। सरकारी क्षेत्र में - कार्यालयों में कार्य निपटान के बारे में साप्ताहिक, मासिक तथा वार्षिक विवरण प्रस्तुत किए जाते हैं तथा उनके आधार पर निष्कर्ष, सुझाव व संस्तुतियाँ प्रस्तुत की जाती हैं।

रिपोर्ट लेखन के विषय असंख्य हैं। सुविधा की दृष्टि से इसे दो वर्गों में बाँटा जाता है - औपचारिक तथा अनौपचारिक।

औपचारिक प्रतिवेदनों में सरकार द्वारा नियुक्त किसी समिति या आयोग के प्रतिवेदन आते हैं। ऐसे प्रतिवेदनों में निष्कर्षों के साथ-साथ सुझाव और संस्तुतियाँ भी दी जाती हैं। ऐसे प्रतिवेदनों की श्रेणी में निम्नलिखित स्थितियों में लिए गए प्रतिवेदन भी आते हैं।

- किसी मंत्रालय, कार्यालय या संस्था की गतिविधियों का वार्षिक विवरण।
- किसी कंपनी के संचालकों या निदेशक मंडल का प्रतिवेदन।

प्रतिवेदन लेखन के विभिन्न चरण

औपचारिक प्रतिवेदनों के लिए प्रतिवेदक को पूरी योजना बनाकर काम करना होता है। चूँकि ऐसे प्रतिवेदन किसी विषय का सम्यक विश्लेषण तथा तथ्यों का संकलन होते हैं, अतः सबसे पहले विषय से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी एकत्र की जाती है।

संबद्ध फाइलों, नियमों, प्रपत्रों, आदेशों आदि से सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। एकत्रित सूचनाओं का वर्गीकरण, सारणीकरण और विश्लेषण किया जाता है। निष्कर्षों एवं सुझावों की रूपरेखा तैयार की जाती है।

फिर प्रतिवेदन का मसौदा तैयार किया जाता है। मसौदे को आयोग/समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों के सामने परस्पर विचार-विमर्श के लिए रखा जाता है और उसमें आवश्यक संशोधन-परिवर्तन किए जाते हैं।

प्रतिवेदन स्वतःपूर्ण एवं स्वतःस्पष्ट होने चाहिए। इनमें संक्षिप्तता का विशेष ध्यान रखा जाता है। केवल महत्वपूर्ण तथ्यों को दिया जाता है। तथ्यों को क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत रूप में देना चाहिए, आवश्यक होने पर उन्हें आँकड़ों एवं तालिकाओं के साथ भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

अंत में ऐसे प्रतिवेदनों पर समिति/आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों के हस्ताक्षर किए जाते हैं।

प्रतिवेदन के स्वरूप के बारे में निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक होता है -

- प्रतिवेदन के आरंभ में शीर्षक देना चाहिए। यह शीर्षक प्रतिवेदन के विषय से सुसंबद्ध होना चाहिए।
- यदि प्रतिवेदन काफी बड़ा हो तो उसे अध्यायों में विभाजित कर देना चाहिए। रेल दुर्घटना आदि के प्रतिवेदन विभिन्न अध्यायों में प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रारंभ में विभिन्न अध्यायों की विषयसूची दी जानी चाहिए।
- यदि प्रतिवेदन का संबंध किसी विषय के अन्वेषण या शोध से हो तो उसके तैयार करने के लिए प्रयुक्त उपयोगी संदर्भ सामग्री की सूची भी अंत में दे दी जानी चाहिए।
- प्रतिवेदन यदि काफी बड़ा हो तो उसका सारांश भी आवश्यक सुझावों के साथ दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार हमने देखा कि प्रतिवेदन संदर्भ, स्थिति या विषय के अनुसार लिखे जाते हैं। जब किसी दुर्घटना का प्रतिवेदन लिखा जाता है तब उस दुर्घटना का स्थान, समय, मारे गए लोगों की सूचना,

दुर्घटना का कारण आदि सभी विवरण देने आवश्यक होते हैं। इसी प्रकार किसी सभा, बैठक या उद्घाटन के प्रतिवेदन में सभा/बैठक के स्थान, समय, कार्यसूची का संक्षिप्त विवरण देना अपेक्षित होगा। ऐसे प्रतिवेदनों में न केवल अंतिम निर्णयों को दिया जाता है बल्कि विभिन्न वक्ताओं के दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करना अभीष्ट होता है। किसी भाषण की रिपोर्ट में वक्ता का सामान्य परिचय तथा विषय का संदर्भ प्रस्तुत करते हुए व्यक्त विचारों का विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

किसी सर्वेक्षण की रिपोर्ट लिखने के लिए पहले सर्वेक्षण की विधि, उसका कार्यक्षेत्र, सूचकों का चयन, सूचना एकत्र करने की विधि - व्यक्तिगत प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली, सरकारी रिकार्ड आदि का चुनाव करना होता है। फिर उसे व्यवस्थित रूप से समिति/आयोग की रिपोर्ट की तरह प्रस्तुत किया जाता है।

अब हम इस विषय से संबंधित प्रतिवेदन का नमूना प्रस्तुत करेंगे।

विषय : घरेलू नौकरों द्वारा हत्या की वारदातें

विभिन्न समाचार पत्रों में इस प्रकार की दुर्घटनाओं के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। इस प्रकार की दुर्घटनाओं के पीछे एक सामान्य तथ्य सामने आता है कि सभी दुर्घटनाओं में हुए शिकार आमतौर पर बड़ी उम्र के लोग ही हैं।

ऐसा पाया गया है कि ऐसे घरों में रखे गए नौकरों के बारे में पुलिस द्वारा जाँच नहीं कराई जाती। पुलिस इस संबंध में, व्यापक रूप से, मकान मालिकों को सचेत करती है कि घर में रखे जाने वाले नौकर की फोटो थाने में प्रस्तुत की जाए तथा उसकी पुलिस द्वारा जाँच कराने के बाद ही उसे घर में रखा जाए। लेकिन आमतौर पर यह पाया गया है कि ऐसे नौकरों के नियोक्ता यह सावधानी नहीं बरतते।

चूँकि ये घरेलू नौकर अभावग्रस्त गरीब तबके से आते हैं, वे ऐसे घरों में उपलब्ध सुविधाओं तथा रुपए-पैसे की जानकारी के बाद लालच में आ जाते हैं और मौका मिलते ही अपने किसी साथी की सहायता से अपने मालिक को हताहत करके माल लेकर चंपत हो जाते हैं।

इस प्रकार की घटनाओं में पकड़े गए अभियुक्तों ने इस तथ्य को भी प्रकट किया है कि कई घटनाएँ मालिकों द्वारा नौकरों से किए गए दुर्व्यवहार के आक्रोश के फलस्वरूप की जाती हैं। कुछ मालिक अपने नौकरों का शोषण और उत्पीड़न करते हैं और नौकर मौका लगते ही, बदले की भावना से, विभिन्न तरह के अपराध कर देते हैं।

बोध प्रश्न-5

अपने क्षेत्र के किसी सरकारी अस्पताल की स्थिति के बारे में संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार कीजिए। रिपोर्ट के लिए निम्नलिखित तथ्यों से सहायता ले सकते हैं।

- आसपास के कई गाँवों के लिए अस्पताल
- दो डाक्टर और दो नर्से
- मरीजों की भीड़
- दवाइयों का अभाव
- जिलाधिकारी व जनप्रतिनिधों को कई बार कहा जा चुका है लेकिन स्थिति में कोई सुधार नहीं होता

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 भाव पल्लवन

भाव पल्लवन से अभिप्राय किसी सुगठित तथा अति संक्षिप्त गुंफ़ित विचार को विस्तार से प्रस्तुत करना होता है। अक्सर महान लेखक अपनी बात को सूक्ति के रूप में कह जाते हैं जिसे सामान्य व्यक्ति के लिए समझना कठिन हो जाता है। ऐसे भाव को विस्तार से समझाने को भाव पल्लवन कहा जाता है। ऐसे सुगुंफ़ित भावों को स्पष्ट करने तथा समझाने के लिए व्याख्या करने की आवश्यकता होती है।

हिंदी में अनेक सूक्तियाँ तथा कहावतें मिलती हैं जिनके अर्थ आसानी से समझ नहीं आते। उनका अर्थ विस्तार या भाव पल्लवन करके लेखक का मंतव्य समझाया जा सकता है।

भाव पल्लवन संक्षेपण का उल्टा रूप है। इसमें मूल कथन का विस्तार से विवेचन किया जाता है। भाव पल्लवन और व्याख्या में क्या अंतर है? पल्लवन में किसी विचार अथवा भाव का विस्तृत विवेचन किया जाता है जबकि व्याख्या में विस्तृत विवेचन के साथ आलोचना का भाव भी जुड़ा रहता है। पल्लवन में सूत्रवाक्य का विवेचन तब तक किया जा सकता है जब तक उसका सही मंतव्य स्पष्ट न हो जाए। भाव पल्लवन और भावार्थ में भी अंतर है। भावार्थ में केवल मूल भाव को ही लिया जाता है जबकि पल्लवन में मूल और गौण दोनों भावों को लिया जा सकता है।

पल्लवन के नियम

- मूल उक्ति या सूक्ति को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए और उस पर चिंतन करना चाहिए ताकि मूल भाव अच्छी तरह समझ में आ जाए।
- मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए अन्य गौण भावों पर भी विचार करना चाहिए। उन्हें एक पृष्ठ प लिख लेना चाहिए।
- मूल भाव का विस्तार करते समय आवश्यकता पड़ने पर उदाहरण या तथ्य भी दिए जा सकते हैं।
- भाव पल्लवन की भाषा सरल तथा स्पष्ट होनी चाहिए।
- अप्रासंगिक या अनावश्यक बातों को नहीं देना चाहिए, केवन मूल भाव के लिए सटीक और उपयुक्त बातों को ही लेना चाहिए।
- मूल भाव की न तो आलोचना करनी चाहिए और न ही अपनी ओर से टिप्पणी करनी चाहिए। केवल मूल भाव का विवेचन या विश्लेषण किया जाता है।
- पल्लवन को लिखने के बाद एक-दो बार पढ़ लेना चाहिए ताकि भाषा विषयक कोई दोष न रह जाए।

"हिंसा बुरी चीज है, पर दासता उससे भी बुरी है।"

यह सत्य है कि हिंसा नहीं करनी चाहिए। किसी को भी दूसरे के प्राण लेने का अधिकार नहीं है। प्राचीन काल से ही मनीषियों ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया है। गांधी जी ने भी हिंसा का विरोध किया और उसे बुरा बताया।

दासता या गुलामी को और भी बुरा माना गया है। कोई दास जीवित रहते हुए भी मरे हुए के समान है। वास्तव में दासता का जीवन जीना हिंसा से भी बदतर होता है। इसीलिए दासत्व के बंधन से मुक्त होने के लिए यदि हिंसा का सहारा लेना पड़े तो वह क्षमा योग्य है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई महान नेताओं ने दासता की शृंखलाओं को तोड़ने का आह्वान किया था।

यह सही है कि अहिंसा अच्छी चीज़ है और हिंसा बुरी, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए कि अहिंसक को अपने अधीन या दास बनाया जाए तो वह कुछ न बोले। इस कथन से यह भी प्रकट होता है कि यदि दासता से मुक्ति पाने के लिए हिंसा का मार्ग अपनाना पड़े तो भी उसमें दोष नहीं हैं।

बोध प्रश्न-6

"जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपत्ति निदाना।।"

इस सूक्ति का भाव पल्लवन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 सारांश

इस इकाई में आपने नोट्स लिखने, किसी पाठ का सारांश तैयार करने तथा रिपोर्ट लिखने के बारे में सीखा। आपने यह भी सीखा कि सारलेखन, रिपोर्ट लेखन पुनःरचना का एक महत्वपूर्ण प्रकार है और इसके लेखन में नोट्स लेखन से कैसे सहायता ली जा सकती है। साथ ही किसी सूक्ति या उक्ति के भाव पल्लवन के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

9.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. हृदय रोग का मुख्य कारण रक्त धमनियों में रुकावट पैदा होना होता है।
2. रक्त धमनियों में रुकावट का समय रहते पता लगाकर हृदय रोग को रोका जा सकता है।
3. जी हाँ, पुरुषों की तुलना में महिलाओं में हृदय रोग कम होता है लेकिन महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद इस रोग की संभावना पुरुषों के समान हो जाती है।
4. 'जैसा कि ऊपर कहा गया है कि अब नौजवान भी इस रोग का शिकार हो रहे हैं' पुनरावृत्ति का उदाहरण है।

बोध प्रश्न-2

1. 1 (गलत), 2 (सही) 3 (गलत), 4 (गलत), 5 (सही), 6 (गलत)
2. 1 (iii), 2 (i), 3 (ii), 4 (v), 5 (iv)

बोध प्रश्न-3

- हृदय रोग के प्रमुख कारणों में रक्त धमनियों में रुकावट पैदा होना है।
- आधुनिक जीवन शैली, गलत खान-पान, तनावपूर्ण जीवन, धूम्रपान, मधुमेह, उच्च रक्तचाप तथा आनुवंशिक कारणों से हृदय रोग होते हैं।
- अभी तक धमनी में रुकावट का पता लगाने के लिए ई.सी.जी., इलक्ट्रोग्राफ़ी थैलियम जाँच, कोरोनरी एंजियोग्राफ़ी का प्रयोग किया जाता था। ये जाँच की तकनीकें काफ़ी खर्चीली हैं।
- अब एक नई तकनीक का विकास हुआ है - यह तकनीक है - मैट्रो कोरोनरी स्क्रीनिंग। इस तकनीक से रक्त धमनियों में रुकावट का पता लगाया जा सकता है। इस पर खर्च भी कम होता है और जाँच के लिए केवल दस मिनट का समय लगता है।

बोध प्रश्न-4

शीर्षक - गांधी जी और अहिंसा

गांधी जी ने अहिंसा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। अहिंसा के माध्यम से वे सभी सामाजिक और आर्थिक संघर्षों का समाधान करते थे। गांधी जी को अहिंसा में पूरी आस्था थी। उनके जीवन के सभी क्रिया-कलाप अहिंसा पर ही केन्द्रित रहे। वे अहिंसा को साधन और साध्य दोनों मानते थे। साध्य के रूप में अहिंसा के माध्यम से अहिंसक विश्व का निर्माण करना चाहते थे।

बोध प्रश्न-5

हमारे क्षेत्र में एक सरकारी अस्पताल है जिसमें आसपास के कई गाँवों के मरीज़ आते हैं। अस्पताल में दो डॉक्टर और दो नर्सें हैं। गाँव के लोगों के रहन-सहन में सफ़ाई की ओर ध्यान न देने से कई बीमारियों का प्रकोप अक्सर होता रहता है। सुबह-सुबह अस्पताल के बाहर काफ़ी भीड़ जमा रहती है। दो डॉक्टरों द्वारा कई गाँवों के मरीज़ों का इलाज करना संभव नहीं है।

अस्पताल में दवाइयों का भी अभाव है - सरकारी खर्च पर मिलने वाली दवाइयाँ न जाने कहाँ चली जाती हैं। इस संबंध में जिलाधिकारियों को कई बार शिकायतें भेजी जा चुकी हैं। जनप्रतिनिधि भी इस ओर कोई ध्यान नहीं देते, केवल आश्वासन देकर चले जाते हैं।

बोध प्रश्न-6

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो विवेकशील है। वह केवल वर्तमान की नहीं सोचता बल्कि भविष्य के बारे में भी विचार कर सकता है। उसमें उचित और अनुचित का ज्ञान कराने वाली बुद्धि है। बुद्धि के दो पक्ष हैं - सुबुद्धि और दुर्बुद्धि। सुबुद्धि सुमति का पर्याय है और कुमति दुर्बुद्धि का। जब मनुष्य में सुमति रहती है तो वह अच्छे कार्यों में लगता है और उसी से वह अच्छे बुरे का विवेक भी करता है। जब वह सुमति से हटकर कुमति के अंतर्गत काम करता है तब उसे कठिनाइयों, विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। सुमति से संपत्ति, सुख की प्राप्ति होती है और कुमति से अहंकार, घमंड, दंभ, क्रोध आदि दुर्गुणों का विकास होता है जो आगे चलकर व्यक्ति को और कठिनाइयों और उलझनों में फँसाती हैं। दूसरी ओर नम्रतापूर्वक आचरण करना, बड़ों का आदर करना, उदार बनना सुमति के लक्षण हैं। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने ही कहा है -

'जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपत्ति निदाना।।'